हिंदी

सीखने के प्रतिफल	*स्रोत और संसाधन*	*सप्ताहवार सुझावात्मक गतिविधियाँ (अभिभावकों द्वारा अध्यापकों के सहयोग से संचालित)*
• लिखने की प्रक्रिया को समझकर अपने अनुभवों को स्वयं लिखते हैं। • अपने परिवेशगत अनुभवों को समझते हुए भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं। • पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के अतिरिक्त कविता, कहानी, निबंध आदि पढ़ते-लिखते हैं। • विभिन्न सामाजिक, प्राकृतिक मुद्दों/घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।	ICT का उपयोग करते हुए पाठ्यपुस्तक में दिए गए QR Code की सहायता ले सकते हैं। • टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रम, इंटरनेट, रेडियो आदि। • NCERT, CIET, E-Pathshala, QR-Code आदि पर उपलब्ध सामग्री देख सकते है। www.ncert.nic.in, www.ciet.nic.in,, www.swayamprabha.gov.in https://www.youtube.com/channel/UCT0s92hGjqLX6p7qY9BBrSA एक उदाहरण– • 'मैं क्यों लिखता हूँ?'– अज्ञेय • एनसीईआरटी की कक्षा 10 की पूरक पाठ्यपुस्तक 'कृतिका भाग 2' में संकलित पाठ। नोट– **संदर्भ-विस्तार के कुछ बिंदु–** • मैं क्यों लिखता हूँ? का उत्तर लिखकर ही जाना जा सकता है। • लिखने का आंतरिक एवं बाहरी दबाव। • आंतरिक दबाव-सच्ची बेचैनी है। • बाहरी दबाव, जैसे– प्रकाशक-आर्थिक आवश्यकताएँ। • अनुभव से अनुभूति तक जाना ''अनुभव तो घटित होता है, पर अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य को आत्मसात कर लेती है, जो वास्तव में कृतिकार के साथ घटित नहीं हुआ है।''	• यदि आप अपने शिक्षक/शिक्षिका से ICT के माध्यम से संपर्क में है तो इस संदर्भ में उनसे बातचीत करनी चाहिए। • लिखने की प्रक्रिया, संदर्भ, अनुभवों, भाषा/शैली पर ICT माध्यमों से जुड़े अपने साथियों, अध्यापकों से बातचीत करें। • परिवार में अपने अभिभावकों/बड़ों से भी पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया पर बातचीत कर सकते हैं। • लिखने की प्रक्रिया के महत्तवपूर्ण बिंदुओं पर चिंतन-मनन करें। • अपने अनुभवों को आपके द्वारा देखी और अनुभूत की गई दुनिया को अपनी भाषा में शब्दबद्ध करने (लिखने) का प्रयास करें। • लिखने की प्रक्रिया एक लंबी और लगातार चलने वाली प्रक्रिया है, अत: धैर्य से अपनी अनुभूतियों को लिखने का प्रयास करें। • पढ़ने-लिखने का ढंग/सामग्री कुछ भी हो सकते हैं, जैसे– कविता, कहानी, निबंध/लेख आदि। • हम अपनी पसंद/मन के अनुकूल कुछ भी कविता, कहानी, लेख आदि लिख सकते हैं। • सुझाई गई सहायक सामग्री के माध्यम से पहले हम स्वयं कहानी पढ़ने-सुनने, समझने का प्रयास करें। • अपने साथियों, अध्यापकों से ICT के माध्यम से बातचीत करने का प्रयास करें कि वे इस कहानी और उसकी विषय-वस्तु के बारे में क्या कहते-सोचते हैं। • इस कहानी के माध्यम से हम साहित्य की एक प्रमुख विधा-(कहानी) से परिचित होते हुए, 'देशभक्ति' को भी विविध संदर्भो में देख-समझ सकते हैं, जैसे– • ''चारों ओर से घिरे भू-भाग का नाम ही देश नहीं होता। देश बनता है उसमें रहने वाले सभी नागरिकों, नदियों, पहाड़ों, पेड़-पौधों, वनस्पतियों, पशु-पक्षियों से और इन सबसे प्रेम करने तथा इनकी समृद्धि के लिए प्रयास करने का नाम देशभक्ति है।'' • देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा के साथ-साथ उपर्युक्त संदर्भों में भी अपनी 'देशभक्ति' की अवधारणा को समझने का प्रयास करें। • इसमें दिए गए विभिन्न आयामों/पहलुओं पर धैर्यपूर्वक चिंतन-मनन करें। • अपने अनुभवों और विचारों को लिखने का प्रयास करें।

	• अज्ञेय, स्वयं विज्ञान के विद्यार्थी होने और हिरोशिमा-नागासाकी (जापान) पर परमाणु बम गिराए जाने के अनुभवों और अनुभूति को एक कविता 'हिरोशिमा' में व्यक्त करते हैं। • बच्चे भी अपने अनुभवों-अनुभूतियों को लिखने की कोशिश करें। • उदाहरण के लिए हम एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग 2' में संकलित कहानी 'नेताजी का चश्मा' लेखक स्वयं प्रकाश, को ले सकते हैं।	• 'नेताजी का चश्मा' कहानी में यदि नेताजी की मूर्ति पर नया-नया चश्मा होना, यहाँ तक किसी बच्चे द्वारा सरकंडे का चश्मा चढ़ाया जाना भी सच्ची देशभक्ति का ही परिणाम है। • कहानी की देशभक्ति की अवधारणा को समझते हुए हम आज-कल 'कोविड-19' (COVID-19) से जूझते देश-समाज के विभिन्न नागरिकों, जैसे– डॉक्टरों, नर्सों, सफ़ाई कर्मचारियों, पुलिसकर्मियों, दैनिक जीवन की अनिवार्य-आवश्यक सेवाओं-वस्तुओं को हम तक पहुँचाते 'देशभक्त नागरिकों' के हौसलों, संघर्षों, चिंताओं, समर्पण आदि के बारे में लिख सकते हैं। • संघर्षमयी परिस्थितियों में अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए हम अपनी 'देशभक्ति' की समझ का विस्तार कर सकते है। • इस कहानी में 'फ़ेरीवालों' की चर्चा है, आज-कल की परिस्थितियों को देखते उनकी आवश्यकताओं पर भी विचार करें। • इस कहानी के माध्यम से शारीरिक रूप से कमज़ोर व्यक्तियों के बारे में भी चर्चा की जा सकती है। (कहानी में ऐसी टिप्पणी/संदर्भ हैं।) • कहानी में 'नगरपालिका' अर्थात् स्थानीय प्रशासन द्वारा कराए जाने वाले कार्यों की भी चर्चा है, आज-कल की परिस्थितियों में देखें कि स्थानीय प्रशासन अपने नागरिकों को कैसी-कैसी सुविधाएँ प्रदान करता है। • साहित्य के दो अलग-अलग रूपों जैसे– कहानी 'नेताजी की चश्मा' (स्वयं प्रकाश) और निबंध 'देश प्रेम' (आचार्य रामचंद्र शुक्ल) द्वारा देशभक्ति को समझा-कहा गया है। आप भी अपने तरीके से कविता-कहानी आदि के द्वारा इसे लिख सकते हैं। • कविता (छाया मत छूना) को दो-तीन बार स्वयं पढ़ने-सुनने का प्रयास करें। इससे किसी भी कविता का मुख्य भाव-विचार धीरे-धीरे खुलने लगता है। • आवश्यकता एवं सुविधानुसार अपने शिक्षकों/शिक्षिकाओं (विशेषत:, जो कक्षा 9–10 में आपको हिंदी पढ़ाते हों) से बातचीत की जा सकती है। • अपने साथियों (मित्रों) से भी कविता के बारे में मोबाइल फ़ोन पर विचार-विमर्श किया जा सकता है। इससे किसी कविता विशेष के बारे में उनके विचारों को जाना जा सकता है। • ''छाया मत छूना'' विगत (जो बीत गया) को भूलकर, उससे सीख लेकर आगे बढ़ने को कहती है। 'भूतकाल' की अपेक्षा अपने वर्तमान और भविष्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। • इस कविता को 'कोरोना काल' की विकट परिस्थितियों के संदर्भ में भी समझने की कोशिश करें। • कविता में आए ध्वनि-साम्य वाले शब्दों की सूची बनाकर, स्वयं भी ऐसे नए शब्दों को देखें-परखें, जैसे– छूना-दूना, सुहावनी-मनभावनी, यामिनी-चाँदनी, सरमाया-भरमाया, मृगतृष्णा-कृष्णा आदि।

• वर्तमान परिस्थितियों में पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं, जैसे– कविता, कहानी, एकांकी आदि को पढ़ते-लिखते हैं। • भाषा साहित्य की बारीकियों पर चर्चा (चिंतन) करते हैं।	• एक उदाहरण के रूप में हम यहाँ एनसीईआरटी की कक्षा 10 की हिंदी पाठ्यपुस्तक में शामिल गिरिजाकुमार माथुर की कविता 'छाया मत छूना' को ले रहे हैं। • QR-Code के माध्यम से हम इस कविता को पढ़-सुन सकते हैं।	• कविता में शब्द अक्सर बहुअर्थी/बहुआयामी होते हैं, अत: हमें उनकी बहुअर्थी छवियों को समझने का प्रयास करना चाहिए, जैसे– छाया, मृगतृष्णा, कठिन यथार्थ, रात कृष्णा आदि।